ISSN : 2581-7353
UGC Care List

खंड-5 अंक-3
अश्विन-कार्तिक-मार्गशीर्ष, 2079/ अक्टूबर-दिसंबर 2022

संवाद पथ

जनसंचार एवं पत्रकारिता केंद्रित पत्रिका

अनुक्रम

संपादकीय

1.	हिंदी पत्रकारिता और गणेश शंकर विद्यार्थी	*चंद्रकांत सिंह*	*9*
2.	न्यू मीडिया का प्रिंट मीडिया पर प्रभाव	*नवीन चंद्र जोशी*	*14*
3.	सोशल मीडिया की विश्वसनीयता : एक अध्ययन	*सुमित श्रीवास्तव*	*22*
4.	फिल्म सम्पादन एक रचनात्मक कला	*कपिल देव प्रसाद निषाद*	*33*
5.	मीडिया और महिला अधिकार	*कुमारी शुभ्रा*	*39*
6.	मणिकौल की सिनेमाई कलादृष्टि	*दिनेश अहिरवार*	*45*
7.	मीडिया और लोकतंत्र	*शशांक शुक्ला*	*50*
8.	सोशल मीडिया का साम्राज्य : एक अवलोकन	*प्रो. माला मिश्र*	*55*
9.	ऑनलाइन जिन्दगी : एक समाजशास्त्रीय विमर्श	*ज्योति सिडाना*	*60*
10.	पत्रकारिता समाधान भी बताए	*गिरीश पंकज*	*66*
11.	स्वास्थ्य संचार और मेडिकल ऐप्स	*अमरेन्द्र कुमार*	*69*
12.	विष्णु खरे की सिने आलोचना	*कृष्ण बिहारी पाठक*	*79*
13.	सिनेमा में रूपांतरण : कला माध्यमों के बीच का द्वंद्व	*पवन कौंडल*	*84*
14.	अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के निहितार्थ	*आकांक्षा यादव*	*88*

हिंदी पत्रकारिता और गणेश शंकर विद्यार्थी

चंद्रकांत सिंह

गुरु होकर भी रहा हमेशा जो विद्यार्थी
क्षमा-शांति का वह गणेशशंकर था प्रार्थी।

गणेश शंकर विद्यार्थी साहित्यिक पत्रकारिता के प्रेरणा पुरुष हैं। आपकी पत्रकारिता में समाज, राष्ट्र और जीवन के बहुआयामी दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं। चूँकि आप नैतिक मूल्यों से युक्त एक समर्पित पत्रकार रहे इसलिए आपकी पत्रकारिता जीवन से किसी भी रूप में कटी हुई नहीं है बल्कि जीवन से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। आपके जीवन में निर्भीकता, साहस और आत्मिक बल की प्रधानता थी यही कारण है कि पत्रकारिता भी सत्ता की दुर्भिसंधियों से दूर गहरे जीवन का बोध कराती है। एक अच्छी पत्रकारिता घटनाओं को देखती है, उसे युगीन सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत करती है। यही नहीं सच को पूरी त्वरा से कहने के साथ झूठ को पूरी तरह से खारिज करने का कार्य भी उसका है। आपने अपनी पत्रकारिता द्वारा सच को आगे ले जाने का साहस दिखाया। आपकी पत्रकारिता घटनाओं का उल्लेख करते हुए कभी त्वरित निर्णय नहीं देती है बल्कि निर्णय करने का अधिकार पाठकों पर छोड़ती है। हाँ, इतना अवश्य है कि इस पत्रकारिता में देश की विषमताओं को चित्रित करने के साथ ब्रिटिश हुकूमत से टकराने का भाव है। आपकी पत्रकारिता के आदर्श अरविंद घोष थे उनकी तरह सच को प्रखरता के साथ कहने की जिद आपके यहाँ थी। किन्तु बाद में चलकर आपकी पत्रकारिता के आदर्श महात्मा गाँधी हुए। गाँधी जी के जीवन से प्रभावित होकर आपने सत्य, निष्ठा, अहिंसा एवं त्याग को अपने जीवन का आदर्श बनाया था। आप प्रारंभ से महात्मा गाँधी द्वारा किए जा रहे प्रयासों को देखते हैं और उनसे सीख लेते हुए देश के प्रति संजीदगी के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। गाँधी जी के आदर्शों की एक बार महाराष्ट्र में तीव्र आलोचना हुई और उनके असहयोग आन्दोलन की समीक्षा करते हुए उन्हें तिलक की तुलना में कम आँकने का प्रयास भी चला। मराठी समाचार-पत्रों मरहटा और केसरी ने जब गाँधी जी को कमतर आँकना शुरू किया उस वक्त विद्यार्थी जी ने अपने लेखन द्वारा संकीर्ण मानसिकता वाले राजनेताओं की आलोचना की। लोकमान्य की तुलना में गाँधी जी की अवमानना करने पर विद्यार्थी जी लिखते हैं- "भारत की जनता अपने लोकमान्य को खूब जानती है। वह उनका काफी आदर करती है। उसे इस बात की ज़रुरत नहीं है कि मरहटा और केसरी व्यर्थ की निंदा करके और महात्मा के ऊपर धूल फेंक कर, उससे लोकमान्य का परिचय दें। यदि इन महानुभावों के मन में वीर-पूजा का भाव